E Learning Study Material
By Prof YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE ARA
VKS UNIVERSITY ARA BIHAR
BA PART TWO ECONOMICS HONS
PAPER THIRD

Types of Farming - Co operative Farming in India

4. सामूहिक कृषि - प्रकार -

सामूहिक कृषि के भी तीन रूप हो सकते हैं -

(a) कृषि के साधनों जैसे - भूमि, पूँजी आदि पर सामूहिक स्वामित्व हो लेकिन कृषि कार्य व्यक्तिगत रूप से किया जाता है।

(b) कृषि कार्य सामूहिक होने के साथ साथ भोजन वस्त्र आवास आदि का भी सामूहिक प्रबन्ध किया जाता है।

(c) भूमि पर पूर्वाधिकार समाज का अधिकार हो तथा खेती का काम संयुक्त रूप में किया जाता है।

सामूहिक कृषि के द्वारा बड़े पैमाने पर कृषि कार्य करने के सभी लाभ प्राप्त होते हैं लेकिन इस प्रणाली में अनेक दोष भी हैं जिसके चलते वर्तमान परिस्थितियों में यह प्रणाली भारत के लिए उपयुक्त नहीं है। इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत स्वामित्व एवं व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का लोप हो जाता है और कृषि कार्य में व्यक्तिगत प्रेरणा का अभाव हो जाता है। व्यक्ति समूची कृषि व्यवस्था के एक पुर्जे के समान हो जाता है जिसके कारण

कृषि उत्पादन में ह्रास भी होने लगता है। भारत में किसानों को अपनी भूमि से विशेष प्रेम है और वे मिट्टी स्वामित्व को छोड़ना भी नहीं चाहेंगे। अतः सामूहिक कृषि व्यवस्था भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है।

5. सहकारी कृषि - सहकारी कृषि, व्यक्तिगत कृषि तथा सामूहिक कृषि के बीच एक प्रकार का समझौता अथवा बुनियादी मार्ग है। इसके अन्तर्गत ऐच्छिक आधार पर किसानों को एक समिति में संगठित कर लिया जाता है। तत्पश्चात उनकी भूमि तथा अन्य साधन एकत्रित करके संयुक्त रूप से खेती की जाती है। लेकिन किसान का अपनी भूमि पर स्वामित्व बना रहता है तथा उन्हें समिति की सदस्यता त्यागने का अधिकार भी होता है। खेती की व्यवस्था एवं प्रबन्ध हेतु समिति के सदस्य मिलकर प्रबन्ध कमेटी का निर्वाचन करते हैं। समिति के सदस्य एवं अन्य श्रमिक मिल-जुल कर खेती करते हैं। प्रत्येक सदस्य को उसकी भूमि और श्रम के आधार पर कृषि उपज के विकृय मूल्य में से हिस्सा मिलता है। चूंकि कृषि कार्यों को बड़े पैमाने पर संगठित करना संभव होता है इसलिए बड़े पैमाने के उत्पादन की समस्त भीतरी और बाहरी बचतें सुलभ होती है।

भारत के लिए उपयुक्त कृषि प्रणाली :-

इसप्रकार उपरोक्त विश्लेषण के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत में कृषि की विभिन्न प्रणालियों का मिश्रण पाया जाता है।

किन्तु व्यापक रूप में व्यक्तिगत कृषि प्रणाली ही प्रचलित है। यदि जोतों का आकार अनार्थिक न हो, भूमि के उपविभाजन एवं अपखण्डन पर रोक लगा दी जाय, किसानों को उन्नत बीज, खाद, उपकरण और ऋण की समुचित सुविधाएँ उपलब्ध हों तब व्यक्तिगत खेती को भारत के लिए सर्वोत्तम कृषि प्रणाली माना जा सकता है। बाडेकर के अनुसार, जनाधिक्य की वर्तमान स्थिति में व्यक्तिगत कृषि का मुख्य लाभ यह है कि परिवार के सभी सदस्यों को रोजगार मिल जाता है क्योंकि इसमें सीमान्त उत्पादकता पर विचार नहीं किया जाता बल्कि कुल उत्पादन बढ़ाने पर बल दिया जाता है। इसका प्रमुख दोष यह है कि यह आर्थिक विकास की कई आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर पाती है। कृषि का संगठन बड़ी इकाइयों में किया जाना चाहिए जिसमें व्यक्तिगत स्वामित्व और प्रेरणा समाविष्ट हो सके, आधुनिक उत्पादन तकनीक अपनायी जा सके और जो समाजवादी उद्देश्य से मेल खाता हो। अतः छोटी जोतों को सहकारी कृषि में संगठित करना तथा अनार्थिक जोतों पर व्यक्तिगत कृषि को बढ़ावा देना भारत के हित में होगा।